

International Institute of Information Technology  
mid-semester examination: Monsoon 2024  
HS1.303 : Readings from Hindi Literature

Time: 1½ Hr.

Max. marks: 25

OPEN BOOK: handwritten/print material allowed; no electronic material is allowed

1. नीचे दी गई कविताओं में से किसी एक के विषय-वस्तु, शैली और रचना के रूप पक्ष पर विस्तार से लिखिए, और पहले पढ़ी कविताओं के साथ तुलनात्मक विवेचन (comparative discussion) कीजिए। 8

भारतीय समाज / भवानीप्रसाद मिश्र

कहते हैं

इस साल हर साल से पानी बहुत ज्यादा गिरा  
पिछले पचास वर्षों में किसी को  
इतनी ज्यादा बारिश की याद नहीं है।

कहते हैं हमारे घर के सामने की नालियां  
इससे पहले इतनी कभी नहीं बहीं  
न तुम्हारे गांव की बावली<sup>pond</sup> का स्तर  
कभी इतना ऊंचा उठा  
न खाइयां कभी ऐसी भरें, न खन्दक  
न नरमदा कभी इतनी बढ़ी, न गन्धक।

पंच-वर्षीय योजनाओं के बांध पहले नहीं थे  
मगर वर्षा में तब लोग एक गांव से दूर-दूर के गांवों तक  
सिर पर सामान रख कर यों टहलते नहीं थे  
और फिर लोग कहते हैं  
जिंदगी पहले के दिनों की बड़ी प्यारी थी  
सपने हो गये वे दिन जो रंगीनियों में आते थे  
रंगीनियों में जाते थे  
जब लोग महफिलों में बैठे बैठे  
रात भर पक्के गाने गाते थे  
कम्बख्त<sup>worthless</sup> हैं अब के लोग, और अब के दिन वाले  
क्योंकि अब पहले से ज्यादा पानी गिरता है  
और कम गाये जाते हैं पक्के गाने।

और मैं सोचता हूँ, ये सब कहने वाले  
हैं शहरों के रहने वाले  
इन्हें न पचास साल पहले खबर थी गांव की  
न आज है  
ये शहरों का रहने वाला ही  
जैसे भारतीय समाज है।

दूसरा बनबास / कैफ़ी आज़मी X

राम बन-बास<sup>बनबास</sup> से जब लौट के घर में आए  
याद जंगल बहुत आया जो नगर में आए  
रक्स-ए-दीवानगी<sup>frenzy dance</sup> ऑगन में जो देखा होगा  
छे दिसम्बर को श्री राम ने सोचा होगा  
इतने दीवाने कहाँ से मेरे घर में आए  
जगमगाते थे जहाँ राम के क्रदमों के निशान  
प्यार की काहकशाँ<sup>long-trails</sup> लेती थी अंगड़ाई<sup>yawn</sup> जहाँ  
मोड़ नफ़रत के उसी राहगुज़र<sup>trails</sup> में आए  
धर्म क्या उन का था, क्या ज़ात थी, ये जानता कौन  
घर न जलता तो उन्हें रात में पहचानता कौन  
घर जलाने को मेरा लोग जो घर में आए  
शाकाहारी थे मेरे दोस्त तुम्हारे खंजर<sup>daggers</sup>  
तुम ने बाबर की तरफ़ फेंके थे सारे पत्थर  
है मिरे सर की खता<sup>crime</sup>, ज़ख्म जो सर में आए  
पाँव सरजू<sup>river in Ayodhya</sup> में अभी राम ने धोए भी न थे  
कि नज़र आए वहाँ खून के गहरे धब्बे  
पाँव धोए बिना सरजू के किनारे से उठे  
राम ये कहते हुए अपने द्वारे से उठे  
राजधानी की फ़ज़ा<sup>environs</sup> आई नहीं रास<sup>not liking</sup> मुझे  
छे दिसम्बर को मिला दूसरा बन-बास मुझे।

(दूसरी ओर देखें)

2. पढ़ी गई कहानियों के आधार पर नीचे दिए गए कथन पर टिप्पणी कीजिए (पक्ष और विपक्ष में - दोनों तरह )  
Based on the stories you have read, comment on the following statement (both pro and con):

'रचना और विचार के संबंध इतने जटिल क्यों हैं?

क्या यह सच है कि विचार के बिना रचना सिर्फ़ क्लम-घसीटी या रिपोर्टिंग होती है और विचार, कला को मारकर स्वयं हावी हो जाता है? धर्म, संस्कृति, कला, साहित्य सभी का दावा है कि वे हमें 'बेहतर मनुष्य' बनाते हैं, वे न हों तो मनुष्य सींग-पूँछ के बिना नितांत पशु हैं। अंततः ये सभी उपक्रम कहीं न कहीं विचार ही हैं, और विचार हमें अपनी भौतिक सीमाओं से उठाकर बृहत्तर चिंताओं तक ले जाते हैं। हम सिर्फ़ अपने लिए नहीं, मनुष्य मात्र के विकास और उन्नयन की बात सोचते हैं। जिसे हम मानवीयता कहते हैं, वह भी कहीं मानव-कल्याण के लिए हमारी संवेदनाओं का सार्वभौमिक विस्तार है। यह एक ऐसा नैतिक बोध है, जो हमारे सारे कार्य-कलाप को साथी मनुष्य के संदर्भ में निर्धारित करता है। जो मेरे लिए ग़लत या सही है वह दूसरे के लिए भी ऐसा ही है। मानवीयता, समस्त मानवता के लिए उच्चतर मूल्यों की स्वीकृति और स्थापना है, नैतिक मूल्यों की चेतना मानव-कल्याण के समग्र बोध से शुरू होती है....'

'Why is the relation between creativity and ideology so complex?

Is it true that a written work without ideology is a mere collection of strokes of pen or reporting of events, and ideology destroys art, imposing itself? Religion, culture, art, literature - all of these claim that they make us 'better human beings'; devoid of them a human is nothing but an animal without the horns and a tail. In the final analysis, these are all ideologies; and ideas elevate us to broader issues beyond our physical constraints. We think not merely for ourselves, we begin to think about every human being. What we call humanity, that must be a universal expansion of our sensitivities towards human welfare. It is such a moral learning, that determines all that we do in reference to our fellow humans. What holds true or wrong for myself, must be the same for others too. Being humane is the acceptance and coming together of higher values for the entire humanity. Moral awareness begins with a holistic understanding of human welfare....'

8

3. समकालीन स्त्री-लेखन की विविधता (diversity) पर चर्चा करें। (विषय-वस्तु में विविधता : जेंडर, सामाजिक सरोकार, घर परिवार और निजी सवाल आदि; भाषा-शैली में विविधता)

7

4. i) संस्थान के पुस्तकालय में उपलब्ध किन्हीं दो साहित्यिक पत्रिकाओं के नाम लिखिए।

(ii) हैदराबाद के किसी एक शायर का नाम और उनकी रचना की पहली पंक्ति लिखें।

1+1